हज़रत इबने जुबैर रदी का किस्सा

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी 'रसूलुल्लाहﷺ के साथियो का हाल'.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*बुखारी, रावी हज़रत औफ बिन मालिक रदी.

हज़रत आईशा रदी से लोगो ने ये बात जाकर कही की आपने फला चीज़ जो बेची या किसी को दे दी, उस पर हज़रत इबने जुबैर रदी (हज़रत रदी आईशा के भान्जे) कहते हे की अगर खाला ना मानेंगी तो में उन पर पाबन्दी लगा दूंगा (यानी जो कुछ बैतुल माल से उन्हे मिलता हे उसको रोक लूंगा, और सिर्फ खर्च दूंगा) हज़रत आईशा रदी ने कहा ये उसने कहा हे? लोगो ने कहा, हा उन्हीने कहा हे तब हज़रत आईशा रदी ने कहा में कसम खाती हूं की अब कभी हज़रत इबने जुबैर रदी से ना बोलूंगी और सम्बन्ध तोड लिया, जब ज़्यादा दिन हो गए तो इबने जुबैर ने लोगो की सिफारिश पहुंचाई, लेकिन वो ना

मानी, फरमाया की हज़रत इबने जुबैर के बारे में में किसी की सिफारिश ना सनूंगी और ना अपनी कसम तोडूंगी.

ये सूरते हाल हज़रत इबने जुबैर के लिए बहुत ही तकलीफ देने वाली थी, इसलिए अबकी बार उन्होने हज़रत मिस्वर बिन मखरमा और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन असवद रदी को कसम देकर कहा की किसी तरह तुम हज़रत आईशा रदी के पास मुझे पहुंचाने का उपाय करो, उन्होने मुझ से सम्बन्ध तोड लिया हे और इस पर कसम खाली हे, ये बात उनके लिए जाइज़ नही, तो हज़रत मिसवर और हज़रत अब्दुर्रहमान रदी उन्हे लिए हुवे हज़रत आईशा रदी के यहा पोहचे, दरवाजे पर दस्तक दी, सलाम किया और कहा, "क्या हम आ सकते हे? हज़रत आईशा रदी ने कहा आ सकते हो, उन दोनो ने कहा "क्या हम सब आ सकते हे? उन्होने कहा हा, तुम सब आ सकते हो और वो ये नही जान सकी की उनके साथ हज़रत इबने जुबैर रदी भी हे जब ये लोग अन्दर मकान में पोहचे तो हज़रत इबने जुबैर उस जगह पहुंच गए जहा हज़रत आईशा रदी पर्दा में बैठी हुई थी, वहा पोहचते ही इबने जुबैर रदी उनसे चिमट गए, उधर वो रो रहे थे और मना रहे थे, कसम देकर

कह रहे थे की आप मेरी गलती माफ कर दे, उधर से हज़रत मिस्वर और हज़रत अब्दुर्रहमान कसम रदी देकर कह रहे थे की आप हज़रत इबने जुबैर रदी की गलती माफ कर दे और बोलना शुरू कर दे, उन दोनो ने उन्हे याद दिलाया की आप ﷺ ने फरमाया हे की किसी मुसलमान के लिए जाइज़ नही हे की तीन रातो से ज़्यादा अपने भाई से सम्बन्ध तोड रखे जब सब लोगो ने हज़रत आईशा रदी पर जोर डाला और याद दिलाया की ये गुनाह का काम वो कर रही हे तो वो रोकर कहने लगी की मेने कसम खाली हे और कसम का मामला बहुत सख्त व शदीद हे, गर्ज़ ये की ये दोनो हज़रत आईशा रदी को बराबर समझाते रहे यहा तक की कसम तोड कर हज़रत इबने जुबैर रदी से बोली, और चालीस गुलाम कफ्फारे के तौर पर आज़ाद किये, और जिन्दगी भर उनका ये हाल रहा की जब कभी अपनी ये गलती याद आ जाती रोने लगती. इतना रोती की उनका दुपट्टा आंसुओ से भीग जाता.